This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **2795**

Unique Paper Code : **2051001006**

Name of the Paper : **HINDI-E : Compulsory Hindi Syllabus (CHS)**

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC-Hindi**

Semester : **I**

Duration : **2 Hours** Maximum Marks : **60**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अपने परिवार के बारे में **10** वाक्य लिखिए। 10

अथवा

अपने दैनिक कार्यक्रम को **10** वाक्यों में लिखिए।

2. परीक्षा से संबंधित जानकारी के लिए दोस्त से फोन पर की गई बातचीत को **50** शब्दों में लिखिए। 10

अथवा

मॉल में कपड़े की दुकान पर की गई बातचीत को **50** शब्दों में लिखिए।

3. बस द्वारा की गई यात्रा के अनुभव को **10** वाक्यों में लिखिए। 10

अथवा

रास्ता पूछने के लिए ऑटो चालक से की गई वार्ता को 10 वाक्यों में लिखिए।

4. निम्नलिखित वर्णों में से **तीन** स्वर एवं **तीन** व्यंजन पहचानकर लिखिए : 6

ए, क, उ, इ, य, व अ, फ, स, ओं, अं, न।

5. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **छः** के वचन बदलिए : 6

सड़क, लड़का, दीवार, कुर्सी, किताब, आँख, रात, नदी।

6. निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं **छः** सर्वनाम शब्दों को पहचानकर लिखिए : 6

(1) तुम घर नहीं जाओगे।

(2) वह मेरी बहन है।

(3) आप मेरे गुरु हैं।

(4) वहाँ कुछ है ?

(5) उसे बुलाओ।

(6) ये लड़के हैं।

(7) वह मेरी बुआ है।

(8) यह घर किसका है ?

7. दिए गए वाक्यों में से किन्हीं छः विशेषण शब्दों को पहचानकर लिखिए : 6

(1) सड़क पर काली घोड़ी भाग रही है।

(2) सीता गीता से अधिक प्रतिभावान है।

(3) यह मेरा बड़ा भाई है।

(4) वह डरपोक है।

(5) संतरा खट्टा है।

(6) बहन छोटी है।

(7) आम मीठा है।

(8) मैं सुखी हूँ।

8. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं छः क्रिया शब्दों को पहचानकर लिखिए : 6

हँसना, चिड़िया, पढ़ना, मालिक, देखना, खाना, राजा, रोना, जागना, लिखना।

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No.	: ....
Sl. No. of Q. Paper	: **2777** **I**
Unique Paper Code	: 2051001002
Name of the Paper	: Hindi Aupcharik Lekhan (B) (AEC)
Name of the Course	: **Common (Prog.) Group : AEC**
Semester	: I

Time : 2 Hours ***Maximum Marks : 60***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(ii) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कार्यालयी हिंदी के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

व्यावसायिक हिंदी के अर्थ को स्पष्ट करते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिये।

P.T.O.

2. विज्ञप्ति के प्रारूप का उल्लेख उदाहरण सहित कीजिए। 12

अथवा

प्रारूपण की परिभाषा बताते हुए इसकी उपयोगिता को रेखांकित कीजिए।

3. कार्यालयी पत्र का स्वरूप समझाए। 12

अथवा

प्रगति मैदान में लगने वाले पुस्तक मेले पर प्रेस विज्ञप्ति तैयार कीजिए।

4. व्यावसायिक पत्र के प्रकारों पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

दिल्ली विश्वविद्यालय में आरक्षित पदों की संख्या के विषय में सूचना हेतु पत्र लिखिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 6+6=12

(i) टिप्पण की विशेषताएँ

(ii) प्रारूपण का उद्देश्य

(iii) सरकारी पत्र

(iv) स्ववृत लेखन

***

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : 2776 I

Unique Paper Code : 2051001001

Name of the Paper : Hindi Bhasha : Sampreshan Aur Sanchar (A)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC Hindi**

Semester : I

Time : 2 Hours ***Maximum Marks : 60***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सम्प्रेषण की अवधारणा और महत्व पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

सम्प्रेषण की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. संचार में सम्प्रेषण की भूमिका की विवेचना कीजिए। 12

अथवा

अन्तःवैयक्तिक और अन्तर्वैयक्तिक संचार की अवधारणा सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

3. ''फिटनेस ने महामारी कोरोना को हराया'' पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। 12

अथवा

'युवा पीढ़ी और जंक फूड' विषय पर एक संपादकीय लिखिए।

4. संवाद लेखन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

ब्लॉग लेखन क्या है ? ''अतुल्य भारत'' पर एक ब्लॉग तैयार कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 6+6=12

(i) सम्प्रेषण के प्रकार

(ii) संचार का महत्व

(iii) प्रतिपुष्टि

(iv) ऑनलाइन शॉपिंग : अनुच्छेद लिखिए

***

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No.	: ....
Sl. No. of Q. Paper	**: 2778 I**
Unique Paper Code	: 2051001003
Name of the Paper	: Social Media Aur Blog Lekhan (C)
Name of the Course	**: Common Prog. Group : AEC - Hindi**
Semester	: I

Time : 2 Hours ***Maximum Marks : 60***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सोशल मीडिया का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

'सोशल मीडिया वर्तमान जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर रहा है' – स्पष्ट कीजिए। 12

2. ब्लॉग लेखन का परिचय देते हुए उसकी प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए। 12

अथवा

युवाओं पर सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव का वर्णन कीजिए। 12

3. 'लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका' विषय पर आलेख तैयार करें। 12

अथवा

फेसबुक पेज पर सामग्री पोस्ट करते हुए कौन-सी सावधानियां बरतनी चाहिए, उल्लेख कीजिए। 12

4. सोशल मीडिया पर 'स्त्री सुरक्षा' विषय पर एक रिपोर्ट तैयार करें। 12

अथवा

'खेलेगा इंडिया तो बढ़ेगा इंडिया' विषय पर सोशल मीडिया हेतु अभियान तैयार करें। 12

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए : (6+6=12)

(क) रोजगार निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका

(ख) जनसामान्य में इंस्टाग्राम की बढ़ती प्रसिद्धि

(ग) यूट्यूब

(घ) सामाजिक मुद्दों से संबंधित सोशल मीडिया

***

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **3594**

Unique Paper Code : **2055201001**

Name of the Paper : **Hindi Bhasha or Sahitya (A)**

Name of the Course : **G.E. : Hindi**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8+8+8=24

(क) दरसन दीजै राम, दरसन दीजै। दरसन दीजै विलंब न कीजै।
दरसन तोरा जीवन मोरा। बिन दरसन क्यों जीवे चकोरा।
साधो सतगुरु सब जग चेला। अबके बिछुरे मिलन दुहेला।
तन धन जोबन झूठी आसा। संत संत भाषै जन रैदासा।

अथवा

बाने फहराने घहराने घंटा गजन के नाहीं ठहराने रावराने देसदेस के।
नग भहराने ग्राम नगर पराने सुनि बाजत निसाने सिवराजजू नरेस के।
हाथिन के हौदा उकसाने कुंभ कुंजर के भौन को भजाने अलि छूटे लट केस के।
दल को दरारें ते कमठ करारे फूटे, कोरा के से पात बिहराने फन सेस के।

(ख) जोग-जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय अद्वैतता काननु सेवत नैन।।
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत है नैननु ही सब बात।।

P.T.O.

अथवा

बेटा आज बिदा है तेरी, बेटी आत्म समर्पण है यह,
जो बेबस है, जो ताड़ित है, उस मानव ही का प्रण है वह।
सावन आयेगा, क्या बोलूंगा हरियाली से कल्याणी ?
भाई-बहिन मचल जायेंगी, ला दो घर की, जीजी रानी,
मेंहदी और महावर मानो सिसक सिसक मनुहार करेंगी,
बूढ़ी सिसक रही सपनों में, यादें किसको प्यार करेंगी ?

(ग) असंख्य कीर्ति रश्मियाँ, विकीर्ण दिव्य दाह-सी।
सपूत मातृभूमि के, रुको न शूर साहसी।।
अराति सैन्य सिन्धु में, सुबाड़वाग्नि से जलो।
प्रवीर हो जयी बनो, बढ़े चलो बढ़े चलो।।

अथवा

निशाकाल के चिर-अभिशापित, बेबस उस चकवा-चकई का
बन्द हुआ क्रंदन, फिर उनमें उस महान सरवर के तीर
शैवालों की हरी दरी पर, प्रणय कलह छिड़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

2. हिंदी भाषा की उत्पत्ति किससे मानी जाती है ? विकासक्रम बताते हुए स्पष्ट कीजिये। 12

अथवा

राष्ट्र भाषा और संपर्क भाषा में अंतर बताइए।

3. छायावादी काव्य की सामान्य प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। 12

अथवा

संत काव्य की विशेषताएँ बताइए।

4. 'बिहारी वागवैदग्ध्य के कवि हैं।' स्पष्ट कीजिये। 12

अथवा

भूषण का युद्ध वर्णन बड़ा ही सजीव और स्वाभाविक है, इस आधार पर इनकी कविताओं का मूल्यांकन कीजिए।

5. जयशंकर प्रसाद की काव्यभाषा की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये। 12

अथवा

नागार्जुन की कविता का भाव-सौंदर्य बताइए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 6+6+6=18

(क) हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक इतिहास

(ख) राम काव्य

(ग) रीतिमुक्त कवि

(घ) राजभाषा

(ङ) माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान।

This question paper contains 2 printed pages   Your Roll No.........

Sl. NO. : 3596
Unique Paper Code : 2055201003
Name of Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya Hindi - C
Course : G.E. - Hindi
Semester : 1
Duration : 3 hours   **Maximum Marks : 90**

इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :   (3 X 8 = 24)

(क) संसै खाया सक्ल जुग, संसा किनहूँ न खद्ध।
जै वेधे गुरु अष्पिरां, तिनि संसा चुणि-चुणि खद्ध॥
चेतनि चौकी बैसि करि, सतगुर दीन्हां धीर।
निरभै होइ निसंक भजि, केवल कहै कबीर॥

अथवा

मैया! मैं नहिं माखन खायो।
ख्याल परै ये सखा सबै मिलि मेरैं मुख लपटायो॥
देखि तुही छींके पर भाजन ऊंचे धरि लटकायो।
हौं जु कहत नान्हें कर अपने मैं कैसें करि पायो॥
मुख दधि पोंछि बुद्धि इक कीन्हीं दोना पीठि दुरायो।
डारि सांटि मुसुकाइ जशोदा स्यामहिं कंठ लगायो॥
बाल बिनोद मोद मन मोह्यो भक्ति प्राप दिखायो।
सूरदास जसुमति को यह सुख सिव बिरंचि नहिं पायो॥

(ख) कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय
या खाये बौराय जग, वा पाये बौराय।
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैनन् ही सब बात॥

अथवा

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ झिझकैं कपटी जे निसाँक नहीं॥
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

(ग) ताड़ के ये पेड़,
हिलती क्षितिज की झालरें;
झूमती हर डाल पर बैठी

फलों से मारती
खिलखिलाती शोख़ अल्हड़ हवा;
गायक-मंडली-से थिरकते आते गगन में मेघ,
वाद्य-यंत्रों-से पड़े टीले,
नदी बनने की प्रतीक्षा में, कहीं नीचे
शुष्क नाले में नाचता एक अँजुरी जल;
सभी, बन रहा है कहीं जो विश्वास
जो संकल्प हममें
बस उसी के सहारे हैं।
लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,

अथवा

छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं प्यारी-
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे-
डिम्ब तोड़कर निकले चिडियों के बच्चों से!

2. हिन्दी भाषा के उद्‌भव और विकास की यात्रा स्पष्ट कीजिये। (12)

अथवा

प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिये।

3. कबीर के **दोहों का सार** लिखिये। (12)

अथवा

सूरदास का साहित्यिक परिचय दीजिए ।

4. बिहारी के दोहों **की समीक्षा कीजिए।** (12)

अथवा

घनान्द **के पदों का प्रतिपादय लिखिए ।**

5. मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक परिचय दीजिए । (12)

अथवा

सुमित्रानंदन पंत की कविता 'आह धरती कितना देती है' **की मूल संवेदना** लिखिए।

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (3 x 6 = 18)

(क) हिन्दी का भौगोलिक **पूर्वी हिन्दी**

(ख) भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(ग) **रीतिमुक्त** काव्य **धारा**

(घ) छायावाद

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **3591**

Unique Paper Code : **2055091001**

Name of the Paper : **Hindi Bhasha Aur Sahitya Ka Udbhav Aur Vikas (A)—(GE)**

Name of the Course : **GE : Hindi**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 10,10

(क) हिंदी भाषा का उद्‌भव

(ख) राजस्थानी

(ग) पहाड़ी हिंदी

(घ) बिहारी हिंदी की प्रमुख बोलियाँ

P.T.O.

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 10,10

(क) संत काव्य

(ख) रीतिकाल

(ग) भारतेंदु युग

(घ) प्रगतिवाद।

3. कबीरदास की सामाजिक चेतना का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 15

अथवा

मीराबाई के काव्य में अभिव्यक्त कृष्ण-भक्ति भावना का विश्लेषण कीजिए।

4. भारतीय साहित्य में 'भारत-भारती' सांस्कृतिक नवजागरण का ऐतिहासिक दस्तावेज है, इसका युक्ति-युक्त उत्तर दीजिए। 15

अथवा

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से" कविता की मूल संवेदना लिखिए।

5. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10,10

(क) नां गुर मिल्या न सिष भया, लालच खेला डाव।
दून्यू बूड़े धार मैं चढ़ि पाथरं की नाव।।

अथवा

हरि म्हारा जीवण प्राण आधार।
और असिरो ना म्हारा थें विण, तीनूं लोक मंझार।
थें विण म्हाणे जग ना सुहावा, निख्या सब संसार।

(ख) हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

अथवा

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई, उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **3592**

Unique Paper Code : **2055091002**

Name of the Paper : **Hindi Bhasha Aur Sahitya Ka Udbhav aur Vikas (B)**

Name of the Course : **GE : Hindi**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. (क) हिंदी भाषा का सामान्य परिचय देते हुए उसके विकास पर चर्चा कीजिए। 12

अथवा

पश्चिमी हिंदी बोलियों का परिचय दीजिए।

(ख) संत काव्य की विशेषताएँ लिखिए। 12

अथवा

छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

P.T.O.

2. कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

रामचरितमानस के केवट प्रसंग का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

3. बिहारी के भाव सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

भूषण की काव्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

4. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता के आधार पर प्रसादजी के प्रकृति प्रेम, देश प्रेम एवं संस्कृति प्रेम पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

'अग्निपथ' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढ़ै बन माँहि
ऐसे घटि घटि राम हैं, दुनियाँ देखें नांहि।

अथवा

कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहि तव नाव न जाई।।
बेगि आनु जलपाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू।।
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।।
सोई कृपालु केवटहि निहोरा। जेहि जगु किय तिहु पगहु ते थोरा।। 10

(ख) या अनुरागी चित्त की गति समुझे नहिं कोय।

ज्यों ज्यों बूड़े स्याम रंग त्यौं त्यौं उज्जलु होइ।।

अथवा

इंद्र जिम जंभ पर, बाड़व ज्यौं अंभ पर,

रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।

पौन् बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर,

ज्यों सहस्रबाहु पर, राम द्विजराज है।

दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर,

भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है,

तेज तम-अंस पर कान्ह जिमं कंस पर

यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है। 10

(ग) बरसाती आँखों के बादल-बनते जहाँ भरे करुणा जल

लहरें टकराती अनन्त की—पाकर जहाँ किनारा

हेम-कुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे

मंदिर ऊँघते रहते ज़ब-जग कर रजनी भर तारा

अरुण यह मधुमय देश हमारा।

अथवा

तू न थकेगा, कभी!

तू न थमेगा कभी!

तू न मुड़ेगा कभी!

कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ।

अग्निपथ ! अग्निपथ! अग्निपथ! 10

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **3442** **I**

Unique Paper Code : 2054001003

Name of the Paper : Hindi Cinema aur Uska Adhyyan (GE)

Name of the Course : **G.E. Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. जनमाध्यम के रूप में हिंदी सिनेमा की क्या उपयोगिता है। स्पष्ट कीजिए। 18

अथवा

क्षेत्रीय सिनेमा की प्रमुख उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।

P.T.O.

2. स्वतंत्रता पूर्व हिंदी सिनेमा के महत्वपूर्ण बदलावों का वर्णन कीजिए। 18

अथवा

हिंदी सिनेमा के विकास में स्टूडियो सिस्टम के महत्व पर विचार कीजिए।

3. भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी सिनेमा का क्या योगदान है, उल्लेख कीजिए। 18

अथवा

सिनेमा में संवाद की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

4. 'अछूत कन्या' फिल्म की समीक्षा कीजिए। 18

अथवा

समानांतर सिनेमा का हिंदी फिल्म उद्योग में क्या योगदान हैं ?

5. निम्नलिखित में से तीन प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। 6+6+6=18

(क) सिनेमा में दृश्य तकनीक।

(ख) पटकथा का महत्व।

(ग) आइटम गीत।

(घ) स्पेशल इफैक्ट्स।

(ङ) व्यवसायिक सिनेमा।

***

'केवट प्रसंग' के आधार पर केवट की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

(ग) 'नर हो ना निराश करो मन को' कविता में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बालिका का परिचय' कविता मातृ हृदय का दर्पण है- विश्लेषण कीजिए।

(घ) 'तोड़ती पत्थर' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

अथवा

प्रकृति सौंदर्य के संदर्भ में 'धूप' कविता का विश्लेषण कीजिए।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :- (6×3=18)

(क) अवधी

(ख) रीतिकाल

(ग) प्रगतिवादी काव्य

(घ) मैथिलीशरण गुप्त

(च) तोड़ती पत्थर में श्रमिक चेतना

(छ) पूर्वी हिंदी

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3595 **I**

Unique Paper Code : 2055201002

Name of the Paper : हिंदी भाषा और साहित्य

Name of the Course : **बी.ए. (प्रोग्राम) हिंदी – जी.ई.**

Semester : I

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (8×3=24)

(क) सतगुर मिल्या त का भया, जे मनि पाडी भोल
पासि बिनंठा कप्पड़ा, क्या करै बिचारी चोल

अथवा

उत्तर ठाढ़ि भए सुरसरि रेता,
सीय रामु गुह लखन समेता
केवट उतरि दंडवत कीन्हा,
प्रभु सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा

(ख) करके विधिवाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो
बनता बस उद्दम ही विधि है
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो न निराश करो मन को

अथवा

कृष्णचंद्र की क्रीड़ाओं को
अपने आंगन में देखो
कौशल्या के मातृमोद को
अपने ही मन में लेखों

(ग) कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;

श्याम तन, भर बंधा यौवन
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार-बार प्रहार :
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार

अथवा

धूप चमकती है चांदी की साड़ी पहने
मैके में आई बिटिया की तरह मगन है
फूली सरसों की छाती से लिपट गई है जैसे दो हमजोली सखियाँ
गले मिली हैं

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- (12×4=48)

(क) हिंदी की किन्हीं दो बोलियों का परिचय दीजिए।

अथवा

संत काव्यधारा की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) कबीर के दोहों के आधार पर गुरु के महत्व का प्रतिपादन कीजिए।

अथवा

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 4335

Unique Paper Code : 2055091003

Name of the Paper : हिंदी भाषा और साहित्य का उद्भव और विकास (GE)-C

Name of the Course : B.Com. (Programme)

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिये : 2×12=24

   (*i*) हिंदी भाषा के स्वरूप का सामान्य परिचय लिखिए।

   (*ii*) हिंदी की किसी एक बोली की विशेषताएँ बताइए।

   (*iii*) आदिकाल की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

   (*iv*) भारतेंदु युग की प्रमुख प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

2. कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

सूरदास के बाल मनोविज्ञान का वर्णन कीजिए।

3. बिहारी **अथवा** घनानंद का साहित्यिक परिचय दीजिए। 12

P.T.O.

4. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए। 12

अथवा

धूमिल की कविता 'रोटी और संसद' की समीक्षा कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।
कबिरा संगत साधु की ज्यों गंधी का बास।
जो कुछ गंधी दे नहीं तौ भी बास सुबास।।

अथवा

उधो, मन न भए दस बीस।
एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अवराधै ईस।।
सिथिल भई सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस।
स्वासा अटकिरही आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्यामसुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूरदास, रसिकन की बतियां पुरवौ मन जगदीस।।

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सब बात।।
कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय।।

अथवा

अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलै तजि आपुनपौ, झिझकें कपटी जे निसाँक नहीं,
घनआनंद प्यारै सुजान सुनो, यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पर देहु छटाँक नहीं।

(ग) चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊं,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक!
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ पर जावें वीर अनेक।

अथवा

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ....
यह तीसरा आदमी कौन है ?
मेरे देश की संसद मौन है।

UNIVERSITY OF DELHI
DELHI-110007

CORRIGENDUM

Sl. No. of Q.P	:	4335
Unique Paper Code	:	2055091003
Name of the Paper	:	हिंदी भाषा और सहित्य का उद्भव और विकास (GE) - C
Name of the Course	:	B.Com. (Programme)
Date of Exam	:	06/01/2024 Afternoon
SEMESTER/YEAR	:	I
DURATION	:	3 Hours
Maximum Marks	:	90

Announcement for candidates

Name of the Course be read as **G.E.- Hindi-C** instead of B.Com. (Programme)

Joint Registrar (Secrecy)

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **3442 I**

Unique Paper Code : 2054001003

Name of the Paper : Hindi Cinema aur Uska Adhyyan (GE)

Name of the Course : **G.E. Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. जनमाध्यम के रूप में हिंदी सिनेमा की क्या उपयोगिता है। स्पष्ट कीजिए। 18

अथवा

क्षेत्रीय सिनेमा की प्रमुख उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।

P.T.O.

2. स्वतंत्रता पूर्व हिंदी सिनेमा के महत्वपूर्ण बदलावों का वर्णन कीजिए। 18

अथवा

हिंदी सिनेमा के विकास में स्टूडियो सिस्टम के महत्व पर विचार कीजिए।

3. भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी सिनेमा का क्या योगदान है, उल्लेख कीजिए। 18

अथवा

सिनेमा में संवाद की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

4. 'अछूत कन्या' फिल्म की समीक्षा कीजिए। 18

अथवा

समानांतर सिनेमा का हिंदी फिल्म उद्योग में क्या योगदान हैं ?

5. निम्नलिखित में से तीन प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। 6+6+6=18

(क) सिनेमा में दृश्य तकनीक।

(ख) पटकथा का महत्व।

(ग) आइटम गीत।

(घ) स्पेशल इफैक्ट्स।

(ङ) व्यवसायिक सिनेमा।

***

This question paper contains 2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 2540

Unique Paper Code : 2052201101

Name of the Paper : Hindi Bhasha or Sahitya ka Itihas (DSC-1)

Name of the Course : B.A. (Prog.) Hindi

Semester : I

Duration : 3 Hours — Maximum Marks : 90

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी की प्रमुख बोलियों का परिचय दीजिए। 15

अथवा

आदिकाल के धार्मिक साहित्य का विस्तृत विवेचन कीजिए।

2. संतकाव्य का परिचय देते हुए उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए। 15

अथवा

भक्तिकाल की प्रमुख काव्यधाराओं का विवेचन कीजिए।

3. 'रीतिकाल' नामकरण की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

रीतिमुक्त कवियों और काव्य का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

4. मध्यकालीनता से आधुनिकता की विकास यात्रा को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 3×10=30

(*i*) रासो साहित्य

(*ii*) रीतिबद्ध काव्य

(*iii*) प्रेमचंदोत्तर कहानी

(*iv*) नयी कविता

(*v*) सूरदास का काव्य।

This question paper contains 2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **2592**

Unique Paper Code : **2052201102**

Name of the Paper : **Hindi Cinema aur Uska Adhyayan (DSC)**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कला विधा के रूप में सिनेमा की विशेषताओं का परिचय दीजिए। 18

अथवा

'सिनेमा विविध कला रूपों का संगम है'—इस कथन की समीक्षा कीजिए।

2. हिंदी सिनेमा की विकास-यात्रा का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 18

अथवा

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी सिनेमा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. सिनेमा निर्माण में कैमरे के महत्व को रेखांकित कीजिए। 18

अथवा

'कैमरा सिनेमा निर्माण की आधारभूत आवश्यकता है'—इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

4. नई तकनीक ने किस प्रकार से सिनेमा को और भी प्रभावशाली बनाने का कार्य किया है ? 18

अथवा

'मुगले आज़म' फिल्म की समीक्षा कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 9,9

(क) हिंदी सिनेमा का आरंभिक दौर

(ख) हिंदी सिनेमा में गीत-संगीत

(ग) शॉट्स और सीक्वेंस

(घ) 'मदर इंडिया' फिल्म का कथानक।

(ख) 'वापसी' कहानी का मूल भाव।

(ग) 'घुसपैठिये' कहानी के शीर्षक की सार्थकता।

(घ) लहनासिंह का चरित्र।

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No.	: ....
Sl. No. of Q. Paper	**: 2128 I**
Unique Paper Code	: 2052101103
Name of the Paper	: Hindi Kahani
Name of the Course	**: B.A (Hons) Hindi**
Semester	: I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्ही **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये।

10+10=20

(क) "कल, देखते नहीं – यह रेशम से कढ़ा हुआ शालू।" लड़की भाग गई लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन-भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभी वाले के ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अंधे की उपाधि पाई तब कहीं घर पहुँचा।

(ख) अब घर का फालतू सामान अलमारी के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा था। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा ? इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल ग्रहणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ श्रीमती की ओर घूम कर अंग्रेजी में बोले – माँ का क्या होगा ?

(ग) और अचानक ही उन्होंने निर्णय ले लिया कि अब घर कि किसी बात में दखल न देंगे। यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई कि जगह यहीं है तो यहीं पड़े रहेंगे। अगर कहीं और डाल दी गई, तो वहाँ चले जाएँगे। यदि बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं तो अपने ही घर में परदेशी की तरह पड़े रहेंगे।

(घ) देखिये, छोटी-मोटी घटनाओं को इतना तूल मत दें। दलित उत्पीड़न जैसा मेरे कॉलेज में कुछ भी नहीं है। और मैं इन वाहियात चीजों को नहीं मानता। हमारे घर में तो भंगिन को भी 'अम्मा' कहा जाता था, "डीन जैसे अपने आप से बाहर ही नहीं निकल रहे थे।

2. 'पंच परमेश्वर' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। 17

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'वारिस' कहानी का विश्लेषण कीजिये।

3. 'चीफ की दावत' कहानी 'सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन' की कहानी है कथन से सम्बन्धित अपने विचार लिखिए। 17

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'उसने कहा था' कहानी के शीर्षक से आप कहाँ तक सहमत हैं। स्पष्ट कीजिये। 16

अथवा

'घुसपैठिये' कहानी हाशिये पर जी रहे दलित समाज की बेचैनियों और छटपटाहटों की कहानी हैं। इस कथन की समीक्षा कीजिये।

5. निम्नलिखित मे से किन्ही **दो** पर टिप्पणी लिखिए। (10+10)

(क) 'तीसरी कसम' कहानी का शिल्प।

2. बानबेध समय का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। 14

अथवा

बानबेध समय के काव्य-सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए।

3. गीतिकाव्य परंपरा में विद्यापति का स्थान निर्धारित कीजिए। 14

अथवा

विद्यापति के काव्य के भाव-वैविध्य का परिचय दीजिए।

4. कबीर का काव्य 'आँखिन देखी पर आधारित है कागद लेखी पर नहीं', इस कथन के आलोक में कबीर के काव्य की समीक्षा कीजिए। 14

अथवा

कबीर की दार्शनिकता को विवेचित कीजिए।

5. सूफी काव्य परंपरा में जायसी का स्थान निर्धारित कीजिए। 14

अथवा

मानसरोदक खंड की अलौकिकता पर प्रकाश डालिए।

6. किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए। 7

(क) विद्यापति की शृंगार भावना।

(ख) जायसी का काव्य सौन्दर्य।

(ग) कबीर की भक्ति भावना।

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **2075** **I**

Unique Paper Code : 2052101101

Name of the Paper : Aadikal evam Nirgunbhakti Kavya
हिंदी कविता : आदिकाल एवं निर्गुण-भक्ति काव्य

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(ii) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए । $9 \times 3 = 27$

(क) भयौ एक फुरमान। बान जोगिनिपुर संध्यौ।।
सुइ सबद अरु बान। अग्र अबिचल कर बंध्यौ।।
बयौ बियौ फुरमान। तानि रष्यौ श्रवनंतरि।।
तियौ भयौ अनभयौ। हरयौ पीतसाहि धरंतरि।।

लै दसन रसन तालु असंघन। सीस फट्टिट दह दिसि गबन।।
सुरतान परयौ षां पुक्करै। भयौ चंद राजन मरन।।

अथवा

बदन चाँद तोर नयन चकोर मोर
रूप अमिय-रस पीवे।
अधर मधुर फुल पिया मधुकर तुल
बिनु मधु कत खन जीवे।।
मानिन मन तोर गढ़ल पसाने।
कके न रमसे हसि किछु न उतरि देसि
सुखें जाओं निसि अवसाने।।

(ख) सतगुर साँचा सूरिवाँ, सबद जू बाह्या एक।
लागत ही में मिलि गया, पढ़या कलेजै छेक।।
सतगुर मारया बाण भरि, धरि करि सूधी मूठि।
अंगि उघाड़ै लागिया, गई दवा सूँ फूंटि।।

अथवा

बिरहा बिरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिह घटि बिरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।
अंषड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़या, राम पुकारि पुकारि।।

(ग) खेलत मानसरोवर गई। जाइ पाल पर ठाढ़ी भई।।
देखि सरोवर हंसे कुलेली। पद्मावतीसौं कहहिं सहेली।।
ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारि।।

जो लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू।।
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवर पाली।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा।।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेही। दारून ससुर न निसरै देहीं।।
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, देहुँ कस जनम निबाह।।

अथवा

धरी तीर सब कंचुकि सारी, सरवर महँ पैठीं सब बारी।
पाइ नीर जानौं सब बेली। हुलसहिं करहिं काम कै केली।।
करिल केस विसहर बिस-भरे। लहरैं लेहिं कवँल मुख धरे।।
नवल बसंत सँवारी करी। होइ प्रकट जानहु रस भरी।।
उठी कोप जस दारिवँ दाखा। भइ उनँत प्रेम कै साखा।।
सरिवर नहिं समाइ संसारा। चाँद नहाइ पैठ लेइ तारा।।
धनि सो नीर ससि तरई उई। अब कित दीठ कमल औ कूई।।
चकई बिछुरि पुकारै, कहाँ मिलौ, हो नाँह।
एक चाँद निसि सरग महँ, दिन दूसर जल माँह।।

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **2104** **I**

Unique Paper Code : 2052101102

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Adikal Evam Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी-साहित्येतिहास - लेखन की परम्परा का मूल्यांकन कीजिए। 15

अथवा

आदिकाल के नामकरण की समस्या पर विचार कीजिए।

2. आदिकाल की सामाजिक - सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

रासो काव्य की प्रवृत्तियों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. निर्गुण काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए। 15

अथवा

सगुण काव्यधारा की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

4. रीतिकाव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

रीतिकालीन वीर काव्य, भक्ति काव्य और नीति काव्य का परिचय दीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10+10+10=30)

(1) नाथ साहित्य

(2) जैन साहित्य

(3) रामभक्ति काव्यधारा

(4) प्रेममार्गी सूफी काव्यधारा

(5) कृष्ण भक्तिकाव्य

***

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2704 **I**

Unique Paper Code : 2051002003

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Takneek (Hindi-C)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : III

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. 'सोशल मीडिया और गुड गवर्नेंस' बेहतर प्रशासन का आधार हैं, स्पष्ट करते हुए अपनी सहमति अथवा असहमति के पक्ष में मत दीजिए ।

अथवा

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में कम्प्यूटंर की भूमिका पर प्रकाश डालिए ।

(15)

P.T.O.

2. हिन्दी के संदर्भ में यूनिकोड फॉण्ट के महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

वेब डिजाइनिंग क्या है? वेब डिजाइनर बनने के लिए क्या सीखना पड़ता है? (15)

3. इंटरनेट और हिंदी का संबंध बताते हुए इंटरनेट पर उपलब्ध हिंदी पत्र-पत्रिकाओ में से दस पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

अथवा

हिंदी की प्रमुख वेबसाइट कौन-कौन सी हैं? किसी एक वेवसाइट की भाषा का विश्लेषण कीजिए। (15)

4. ई-मेल का अर्थ बताते हुए, ई-मेल संदेश लेखन करते हुए ध्यान देने वाले तत्वों का विश्लेषण कीजिए एवं उदाहरण के रूप में एक ई-मेल संदेश लिखिए।

अथवा

कम्प्यूटर का हिन्दी अनुवाद में क्या योगदान है? स्पष्ट करते हुए मशीनी अनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए। (15)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2703 **I**

Unique Paper Code : 2051002002

Name of the Paper : Jansanchar aur Rachnatmak Lekhan (Hindi B)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : III

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. रचनात्मक लेखन का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसका महत्व प्रतिपादित कीजिए। (15)

अथवा

रचनात्मक लेखन के विविध रूपों का संक्षिप्त परिचय देते हुए इसमें कल्पना के महत्व पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. जनसंचार माध्यमों से आप क्या समझते हैं? हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने में इनकी भूमिका स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

जनसंचार माध्यमों में रचनात्मक लेखन का महत्व बताइए।

3. अपना प्रिय यात्रा वृत्तांत लिखिए। (15)

अथवा

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के लिए किसी फिल्म निर्देशक का साक्षात्कार लिखिए।

4. प्रिंट मीडिया के लिए एक आकर्षक विज्ञापन बनाइये। (15)

अथवा

रेडियो धारावाहिक के लिए रोचक संवाद लिखिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2703 **I**

Unique Paper Code : 2051002002

Name of the Paper : Jansanchar aur Rachnatmak Lekhan (Hindi B)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : III

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. रचनात्मक लेखन का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसका महत्व प्रतिपादित कीजिए। (15)

अथवा

रचनात्मक लेखन के विविध रूपों का संक्षिप्त परिचय देते हुए इसमें कल्पना के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. जनसंचार माध्यमों से आप क्या समझते हैं? हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने में इनकी भूमिका स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

जनसंचार माध्यमों में रचनात्मक लेखन का महत्व बताइए।

3. अपना प्रिय यात्रा वृत्तांत लिखिए। (15)

अथवा

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के लिए किसी फिल्म निर्देशक का साक्षात्कार लिखिए।

4. प्रिंट मीडिया के लिए एक आकर्षक विज्ञापन बनाइये। (15)

अथवा

रेडियो धारावाहिक के लिए रोचक संवाद लिखिए।

[This question paper contains 2 printed pages:]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2702 **I**

Unique Paper Code : 2051002001

Name of the Paper : Vyavharik Hindi (Hindi-A)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : III

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

समय : 2 घण्टे पूर्णांक : 60

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. बोलचाल में प्रयोग होने वाली व्यावहारिक हिन्दी के विविध रूपों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सामान्य ग्राहक की सुविधा के लिए बैंकों में हिन्दी का प्रयोग आवश्यक है। कथन के आधार पर बैंकों में प्रयुक्त होने वाली आन का विवेचन कीजिए। (15)

2. तकनीकी विकास ने संपर्क-भाषा के रूप में हिन्दी के क्षेत्र को विस्तार दिया है- अपनी राय व्यंक्त कीजिए।

अथवा

मानक हिन्दी और हैदराबादी हिन्दी के अंतर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (15)

3. 'बाज़ार हिन्दी को प्रभावित करता आया है।' - कथन के संदर्भ में हिन्दी की स्थिति का वर्णन कीजिए।

अथवा

अपना व्यवसाय आरंभ करने के लिए ऋण हेतु बैंक-प्रबन्धक को पत्र लिखिए। (15)

4. कार्यालयों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का उल्लेख कीजिए।

अथवा

किसी साप्ताहिक बाज़ार का आंखों-देखा वर्णन कीजिए। (15)

(15000)

[This question paper contains 2 printed pages:]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2702 **I**

Unique Paper Code : 2051002001

Name of the Paper : Vyavharik Hindi (Hindi-A)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : III

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

समय : 2 घण्टे पूर्णांक : 60

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. बोलचाल में प्रयोग होने वाली व्यावहारिक हिन्दी के विविध रूपों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

P.T.O.

सामान्य ग्राहक की सुविधा के लिए बैंकों में हिन्दी का प्रयोग आवश्यक है। कथन के आधार पर बैंकों में प्रयुक्त होने वाली आन का विवेचन कीजिए। (15)

2. तकनीकी विकास ने संपर्क-भाषा के रूप में हिन्दी के क्षेत्र को विस्तार दिया है- अपनी राय व्यंक्त कीजिए।

अथवा

मानक हिन्दी और हैदराबादी हिन्दी के अंतर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (15)

3. 'बाज़ार हिन्दी को प्रभावित करता आया है।' – कथन के संदर्भ में हिन्दी की स्थिति का वर्णन कीजिए।

अथवा

अपना व्यवसाय आरंभ करने के लिए ऋण हेतु बैंक-प्रबन्धक को पत्र लिखिए। (15)

4. कार्यालयों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का उल्लेख कीजिए।

अथवा

किसी साप्ताहिक बाज़ार का आंखों-देखा वर्णन कीजिए। (15)

(15000)

बालक राम किछुवे नाहि जाने ।

ता हेरि रह नाहि प्राणे ।।

2. वैदिक एवं अपभ्रंश भारतीय साहित्य पर विस्तार से चर्चा कीजिए । (15)

अथवा

मैथिली भाषा के साहित्य पर एक निबंध लिखिए।

3. कालिदास रचित 'उत्तरमेघ' के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

'सप्त पर्ण' राम काव्य का जन्म का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. संत नामदेव के पदों का भाव सौंदर्य लिखिए। (15)

अथवा

ललद्यद के पदों का भाषा सौष्ठव लिखिए।

5. 'काबुलीवाला' कहानी का मूल संदेश स्पष्ट कीजिए ।। (15)

अथवा

'रामविजय' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 1662 **I**

Unique Paper Code : 2052102301

Name of the Paper : Bhartiya Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (10+10+10)

(क) वत्स ! स्वच्छ प्रसन्न जल की

देख निर्मल कान्ति,

याद आती सन्त मन की

विगत कल्मष शांति !

कलश रख दो और दे दो
मुझे वल्कल चीर,
यहीं अवगाहन करूँगा
धार यह गम्भीर।

अथवा

टहरी पर बैठी होगी, पड़े होंगे सामने फूलों के
सहारे गिर रही होगी
अवधि के बाकी महीनें
बिताए दिनों के सम्पर्क सुख की
यादों का ले रही होगी मन ही मन स्वाद
बिछुड़ी प्यारी के यही तो होते हैं
साधन।

(ख) पिया को खोजने में निकली
सुन ही यह दिन बीता
कब यह रात ढली!
मिले अंत में घर में ही तो
मेरे कंत छली !

मेरे उनके स्नेह मिलन की
थी यह घड़ी - भली ।

अथवा

हम सब समान हैं, समानता का आया युग, आया !
मिट रहा कपट, निश्छल जनता का आया युग, आया !
जो सच्चे हैं, वह बड़े ! उन्हीं का आया युग, आया !
यह प्रलय काल दुर्जन कपटी का ! आया युग, आया!
आओ नाचें - गायेंगे जी भर, मोद मनायेंगे !
आनंद छंद मय स्वतंत्रा पर मोद मनायेंगे !

(ग) संसार की भाषाओं की भिन्नता के सम्बन्ध में उसे ज्ञानदान करने के लिए मेरे प्रवृत होने के पहले ही वह दूसरे प्रसंग पर चली गई। 'देखो पिताजी, भोला कह रहा था कि आकाश में हाथी सूंड से पानी डालता है, उसी से वर्षा होती है ओ माँ ! भोला कैसी बेकार की बातें करता है ! खाली बकबक करता रहता है! दिन-रात बकबक लगाए रहता है।'

अथवा

नेहबि राम राक्षस लागि मागि ।
आहे अधिक हृदये दहे आगि ।।

6. निम्न में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए । (6)

(क) व्यंग्य

(ख) स्वतंत्रता-पूर्व निबंध

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3088 I

Unique Paper Code : 2055002001

Name of the Paper : हिन्दी गद्य उद्भव और विकास, Hindi - A

Name of the Course : **G. E. : Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (8×3=24)

(क) पण्डित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील - मुख्तार उनके

आज्ञापालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे, इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए ?

अथवा

रक्खे ने सीधा होने की चेष्टा की क्योंकि उसकी रीढ़ की हड्डी बहुत दर्द कर रही थी। अपनी कमर और जाँघों के जोड़ पर उसे सख्त दबाव महसूस हो रहा था। पेट की अन्तड़ियों के पास से जैसे कोई चीज उसकी साँस को रोक रही थी। उसका सारा जिस्म पसीने से भीग गया था और उसके तालुओं में चुनचुनाहट

4. 'भाव और मनोविकार' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए । (15)

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा' निबंध के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए ।

5. 'दीपदान' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए । (15)

अथवा

'सुभद्रा' संस्मरण के आधार पर सुभद्रा की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

2. रेखाचित्र और संस्मरण का अंतर स्पष्ट करते हुए रेखाचित्र की विशेषताएँ बताइए । (15)

अथवा

कहानी का सामान्य परिचय देते हुए स्वातंत्र्योत्तर कहानी के विकास यात्रा स्पष्ट कीजिए।

3. 'नमक का दरोगा' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी विभाजन के बाद संबंधों और परिवेश में आए बदलावों को दर्शाती हैं... इस कथन की युक्तियुक्त समीक्षा कीजिए ।

हो रही थी। बीच-बीच में नीली फुलझड़ियाँ-सी ऊपर से उतरती और तैरती हुई उसकी आँखों के सामने से निकल जातीं। उसे अपनी जबान और होंठों के बीच एक फासला सा महसूस हो रहा था।

(ख) सुख और दुख की मूल अनुभूति ही विषय - भेद के अनुसार प्रेम, हास, उत्साह, आश्चर्य, क्रोध, भय, करुणा, घृणा इत्यादि मनोविकारों का जटिल रूप धारण करती है। जैसे यदि शरीर में कहीं सुई चुभने की पीड़ा हो तो केवल सामान्य दुख होगा; पर यदि साथ ही यह ज्ञात हो जाए कि सुई चुभानेवाला कोई व्यक्ति है तो उस दुख की भावना कई मानसिक और शारीरिक वृत्तियों के साथ संश्लिष्ट होकर उस मनोविकार की योजना करेगी जिसे क्रोध कहते हैं।

अथवा

तेज बारिश में पेड़ की छाया और दुखद हो जाती है, पेड़ की हर पत्ती से टपटप बूँदें पड़ने लगती हैं, तने पर टिके तो उसकी हर नस-नस से आप्लावित होकर पीठ गलाने लगती है। जाने कब से मेरे राम भीग रहे हैं और बादल हैं कि मूसलाधार ढरकाए चले जा रहे हैं, इतने में मन में एक चोर धीरे- फुसफुसाता है, राम तुम्हारे कब से हुए, तुम, जिसकी बुनावट पहचान में नहीं आती, जिसके व्यक्तित्व के ताने-बाने तार-तार होकर अलग हो गए हैं, तुम्हारे कहे जाने वाले कोई हो भी सकते हैं कि वह तुम कह रहे हो, मेरे राम! और चोर की बात सच लगती है, मन कितना बटा हुआ है, मनचाही और अनचाही दोनों तरह की हजार चीजों में ।

(ग) आँधी में आग की लपटें तेज ही होती हैं, सोना। तुम भी उसी आँधी में लड़खड़ा के गिरोगी । तुम्हारे ये सारे नूपुर बिखर जाएँगें । न जाने किस हवा का झोंका तुम्हारे इन गीतों की

लहरों को निगल जायेगा द्य चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं ।

अथवा

नारी के हृदय में जो गम्भीर ममता-सजल वीर-भाव उत्पन्न होता है वह पुरुष के उग्र शौर्य से अधिक उदात्त और दिव्य रहता है। पुरुष अपने व्यक्तिगत या समूहगत रागद्वेष के लिए भी वीर धर्म अपना सकता है और अहंकार की तृप्ति मात्र के लिए भी। पर नारी अपने सृजन की बाधाएँ दूर करने के लिए या अपनी कल्याणी सृष्टि की रक्षा करने के लिए ही रुद्र बनती है। अतः उसकी वीरता के समकक्ष रखने योग्य प्रेरणाएँ संसार के कोश में कम हैं।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) हिन्दी कहानी

(ख) रेखाचित्र

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3093 I

Unique Paper Code : 2055002003

Name of the Paper : हिन्दी गद्य : उद्‌भव और विकास (ग)

Name of the Course : **G.E. : Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) अब भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे। कई बार मुझे डांटने

का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डांटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम । मेरी स्वच्छन्दता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास हो ही जाऊंगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है; इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौवे उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी की ही भेंट होता थाय फिर भी में भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नजर बचाकर कनकौवे उड़ाता था।

अथवा

और यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुंह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न रहा हो। बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूंज रहे थे। सोचता था कैसे ऊंचे विचार हैं, कैसा

अथवा

'हार की जीत' कहानी की कहानी के तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिये। (15)

4. 'मेले का ऊँट' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध की मूल संवेदना का सारगर्भित विश्लेषण कीजिये। (15)

5. 'बुधिया' पाठ रेखाचित्र विधा का निकष है' इस कथन के आधार पर 'बुधिया' रेखाचित्र की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'भोलाराम का जीव' पाठ की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

नारद चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गए। बोले – "भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो?"

"हाँ", आवाज आई।

नारद ने कहा– "मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग में तुम्हारा इंतजार हो रहा है।" आवाज आई– "मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता।"

2. संस्मरण विधा का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

हिंदी निबंध का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

3. 'बड़े भाई साहब' कहानी के मूल भाव को स्पष्ट कीजिये।

पवित्र भाव है। उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाई खिल जाता था। कहते थे इसके बिना मैं रह न सकूँगा।

(ख) जाते हुए मेरे साथ पैदल जाते थे और लौटते हुए मेरी पीठ पर चढ़े हुए हिचकोले खाते वह स्वर्गीय सुख लूटते थे कि तुम रबड़ के पहिये वाली चमड़े की कोमल गद्दियोंदार फिटिन में बैठकर भी वैसा आनंद प्राप्त नहीं कर सकते। मेरी बलबलाहट उनके कानों को इतनी सुरीली लगती थी कि तुम्हारे बगीचों में तुम्हारे गवैयों तथा तुम्हारी पसंद की बीबियों के स्वर भी तुम्हें उतने अच्छे न लगते होंगे। मेरे गले के घंटों का शब्द उनको सब बाजों से प्यारा लगता था।

अथवा

ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा। प्राणि-शास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूंछ झड़ गई है । उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी । शायद उस दिन वह मारणास्त्रो का प्रयोग भी बंद कर देगा । तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है। बृहतर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों का बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तकाजा है। मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास बिना सिखाये आ जाती है, वह पशुत्व का दयोतक है और अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है। बच्चे यह जाने तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएं मनुष्य कि महिमा को सूचित करती हैं।

(ग) आज पीटता जरूर; लेकिन माफ कर दिया। वह मुस्करा पड़ी। बैठ गई। बैठिए उस गंदगी में क्यों बैठने लगा, झुककर देखने लगा। उसने कहना शुरू किया- यह है दूल्हा - सिर पर गौर। सरसों के फूल की इशारा करती- बसंती मोर। यह दुल्हन कैसी भी चुंदरी, मटर बने, से फूलों की। इनकी होगी शादी। खूब बजेंगे बाजे। दो-तीन बार उससे पेट पीटा, फिर मुंह से सीटी दी - ढ़ोल भी; शहनाई भी। यह कोहवर पर धूल से चौकोर पैर कर बनाया। यह है फूलसेज- आम के हरे पत्तों पर कुछ फूल बिखेर। इस पर सोएँगे दोनों। और मैं गाऊँगी गीत...

अथवा

नारद समझे कि साहब कुछ ऊंचा सुनता है। इसलिए जोर से बोले- "भोलाराम।" सहसा फाइल में से आवाज आई- "कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है? क्या पेंशन का ऑर्डर आ गया?

'मलबे का मालिक' कहानी का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए । (12)

4. 'उत्साह' निबंध में निहित संदेश पर विचार कीजिए ।

अथवा

'रहिमन पानी राखिए' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए । (12)

5. 'अंधेर नगरी' नाटक में प्रस्तुत व्यंग्य की समीक्षा कीजिए ।

अथवा

'चीड़ों पर चाँदनी' यात्र वृतांत का सार लिखिए । (12)

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए:

(क) प्रेमचंदयुगीन उपन्यास

(ख) आत्मकथा (12)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............
आपका अनुक्रमांक.............

Sr. No. of Question Paper : 7446 **I**

Unique Paper Code : 62051312

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi - A**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (2×7.5=15)

(क) पूर्ण स्वराज्य का जुलूस निकल रहा था। कुछ युवक, कुछ बूढ़े, कुछ बालक झंडियाँ और झंडे लिये वंदेमातरम् गाते हुए माल के सामने से निकले। दोनों तरफ दर्शकों की दीवारें खड़ी थीं, मानो उन्हें इस लक्ष्य से कोई सरोकार नहीं हैं, मानो यह कोई तमाशा

है और उनका काम केवल खड़े-खड़े देखना है। शंभूनाथ ने दुकान की पटरी पर खड़े होकर अपने पड़ोसी दीनदयाल से कहा- सब के सब काल के मुँह में जा रहे हैं। आगे सवारों का दल मार मार भगा देगा। दीनदयाल ने कहा- महात्मा जी भी सठिया गये हैं। जुलूस निकालने से स्वराज्य मिल जाता तो अब तक कब का मिल गया होता। और जुलूस में हैं कौन लोग, देखो - लौंडे, लफंगे, सिरफिरे । शहर का कोई बड़ा आदमी नहीं । मैकू चट्टियों और स्लीपरों की माला गरदन में लटकाये खड़ा था। इन दोनों सेठों की बातें सुनकर हँसा ।

अथवा

इस बार की असफलता ने तो बस मुझे रुला ही दिया। अब तो इतनी हिम्मत भी नहीं रही कि एक बार फिर मध्यम वर्ग में अपना नेता उत्पन्न करके फिर प्रयास करती। इन दो हत्याओं की मार से ही मेरी गर्दन टूटी जा रही थी, और अधिक का पाप ढोने की इच्छा थी न शक्ति ही । और अपने सारे अहं को तिलांजलि देकर बहुत ही ईमानदारी से मैं कहती हूँ कि मेरा रोम-रोम महसूस कर रहा था कि कवि भरी सभा में शान के साथ जो नहला फटकार गया था उस पर इक्का तो क्या मैं दुग्गी भी न मार सकी । मैं हार गई, बुरी तरह हार गई।

(ख) सेत सेत सब एक से, जहाँ कपूर कपास ।

ऐसे देस कुदेस में, कबहुँ न कीजै बास ।।

कोकिल बायस एक सम, पंडित मूरख एक ।

इंद्रायन दाड़िम विषय, जहाँ न नेकु विवेक ।।

अथवा

अशोक का वृक्ष जितना भी मनोहर हो, जितना भी रहस्यमय हो, जितना भी अंधकारमय हो, परंतु है वह उस विशाल सामंत-सभ्यता की परिष्कृत रुचि का ही प्रतीक, जो साधारण प्रजा के परिश्रमों पर पली थी, उसके रक्त के संचार कणों को खाकर बड़ी हुई थी और लाखों-करोड़ों की उपेक्षा से जो समृद्ध हुई थी। वे सामंत उखड़ गए, समाज ढह गए, और मदनोत्सव की धूमधाम भी मिट गई। संतान कामिनियों को गन्धर्वों से अधिक शक्तिशाली देवताओं का वरदान मिलने लगा - पीरों ने भूत-भैरवों ने काली दुर्गा ने यक्षों की इज्जत घटा दी। दुनिया अपने रास्ते चली गई, अशोक पीछे छूट गया ।

2. 'हिन्दी कहानी' की विकास यात्र का संक्षिप्त परिचय लिखिए। (12)

अथवा

'संस्मरण' की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए ।

3. 'जुलूस' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

मान लेता है। चोर ईमानदारी का उपयोग नहीं जानता, झूठा सत्य के प्रयोग से अनभिज्ञ रहता है । किसी गुण से अनभिज्ञ या उसके सम्बंध में अनास्थावान मनुष्य यदि उस विशेषता से युक्त व्यक्ति का विश्वास न करे, तो स्वाभाविक ही है, पर उसकी भ्रान्त धारणा भी प्रायः समाज में प्रमाण मान ली जाती है; क्योंकि मनुष्य किसी को दोष- रहित नहीं स्वीकार करना चाहता और दोषों के अथक अन्वेषक दोषयुक्तों की श्रेणी में ही मिलते हैं। बिबिया पर लांछन लगानेवाले भीखन के आचरण के सम्बंध में किसी को भ्रम नहीं था; पर बिबिया के आचरण में त्रुटि खोजने के लिए उसकी स्वीकारोक्ति को सत्य मानना अनिवार्य हो उठा। वह अपने अभियोग की सफाई देने के लिए नहीं पहुँच सकी। पहुँचने पर उस क्रुद्ध सिंहनी से पंचदेवताओं को कैसा पुजापा प्राप्त होता, इसका अनुमान सहज है।''

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए: (7)

(क) प्रेमचंद युगीन कहानी

(ख) रिपोर्ताज

(ग) आत्मकथा और जीवनी में अंतर

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 7447 **I**

Unique Paper Code : 62051313

Name of the Paper : Hindi B

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi B**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नाटक की परिभाषा देते हुए उसके विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

हिंदी निबन्ध का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

2. 'बूढ़ी काकी' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

' उसने कहा था' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए ।

3. 'सदाचार का ताबीज़' लेख में निहित व्यंग्य पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'मेले का ऊँट' निबंध के माध्यम से निबन्धकार क्या संदेश देना चाहते हैं स्पष्ट कीजिए ?

4. 'अंधेर नगरी' नाटक आज भी प्रासंगिक है।' इस कथन के आलोक में नाटक की समीक्षा कीजिए । (12)

अथवा

'बिबिया' संस्मरण के आधार पर बिबिया का चरित्र चित्रण कीजिए ।

5. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (2×10=20)

(क) ''मिस्टर शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, फिर अधखुली आँखों से माँ की ओर देखने लगे, और माँ के कपड़ों की सोचने लगे। शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे। घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था । खूंटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछे, किस रंग के पर्दे लगाए जाएँ, श्रीमती

कौन-सी साड़ी पहनें, मेज किस साइज की हो... शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ का साक्षात माँ से हो गया, तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े। माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए बोले – ''तुम सफेद कमीज और सफेद सलवार पहन लो, माँ । पहन के आओ तो, जरा देखूँ।''

(ख) ''आज से पचास साल पहले रेल कहाँ थी? मैंने मारवाड़ से मिरजापुर तक और मिरजापुर से रानीगंज तक कितने ही फेरे किए हैं। महीनों तुम्हारे पिता के पिता तथा उनके भी पिताओं का घर मेरी पीठ पर रहा। जिन स्त्रियों ने तुम्हारे बाप के भी बाप को जाना है, वे सदा मेरी पीठ को ही पालकी समझती थीं। मारवाड़ में मैं सदा तुमने द्वार पर हाजिर रहता था, पर यहाँ वह मौका कहाँ ? इसी से इस मेले में मैं तुम्हें देखकर आँखें शीतल करने आया हूँ। तुम्हारी भक्ति घट जाने पर भी मेरा वात्सल्य नहीं घटा है। घटे कैसे? मेरा तुम्हारा जीवन एक ही रस्सी से बंधा हुआ था। मैं ही हल चलाकर तुम्हारे खेतों में अन्न उपजाता था और मैं ही चारा आदि पीठ पर लादकर तुम्हारे घर पहुँचता था । यहाँ कलकत्ते में जल की कलें हैं, गंगाजी हैं, जल पिलाने को लाखों कहार हैं, पर तुम्हारी जन्मभूमि में मेरी पीठ पर लादकर कोसों से जल लाया जाता था और मैं तुम्हारी प्यास बुझाता था ।''

(ग) 'दूसरे की दुर्बलता के प्रति मनुष्य का ऐसा स्वाभाविक आकर्षण है कि वह सच्चरित्र की त्रुटियों के लिए दुश्चरित्र को भी प्रमाण

2. हिंदी गद्य के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी में देश-विभाजन की त्रासदी का जीवंत चित्रण किया गया है। स्पष्ट कीजिए।

3. निबंध के तत्वों के आधार पर 'अशोक के फूल' निबंध की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबंध के आधार पर बालकृष्ण भट्ट के साहित्य संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।

4. नाटक के तत्वों के आधार पर 'जिस लाहौर नइ देख्या' नाटक की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'भोलाराम का जीव' में निहित व्यंग को स्पष्ट कीजिए।

5. महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'घीसा' संस्मरण के पात्र घीसा की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'उत्साह' निबंध का मूल प्रतिपाद्य लिखिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (6+6=12)

(क) यात्रा वृतांत

(ख) प्रेमचंदयुगीन कहानी

(ग) संस्मरण

(1000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7443 **I**

Unique Paper Code : 62081339

Name of the Paper : हिंदी गद्य : उद्भव और विकास (हिंदी-क)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Functional Hindi**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) ऊषा के आलोक में सभा-मण्डप दर्शकों से भर गया। बन्दी अरुण को देखते ही जनता ने रोष से हूँकार करते हुए कहा-'वध करो!' राजा ने सबसे सहमत होकर आजा दी-'प्राण दण्ड।' मधूलिका बुलायी गई। वह पगली-सी आकर खड़ी हो गई। कोशल-नरेश ने पूछा-मधूलिका, तुझे जो पुरस्कार लेना हो, माँग। वह चुप रही। राजा ने कहा-मेरी निज की जितनी खेती

है, में सब तुझे देता हूँ। मधूलिका ने एक बार बन्दी अरुण की ओर देखा। उसने कहा-मुझे कुछ न चाहिए। अरुण हँस पड़ा। राजा ने कहा-नहीं, मैं तुझे अवश्य दूँगा। माँग ले। तो मुझे भी प्राणदण्ड मिले। कहती हुई वह बन्दी अरुण के पास जा खड़ी हुई।

अथवा

पं. अलोपीदीन ने हँसकर कहा, 'हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढावें। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था। वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रआव न पडा। ईमानदारी की नई उमंग थी। कडककर बोले, 'हम उन नमकहरामों में नहीं है जो कौडियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। आपको कायदे के अनुसार चालान होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फुर्सत नहीं है। जमादार बदलूसिंह। तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।

(ख) थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की साँ-डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागजात भी थे। साहब ने फाइल पर का नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा, "क्या नाम बताया साधुजी आपने?" नारद समझे कि साहब कुछ

ऊँचा सुनता है। इसलिए जोर से बोले, "भोलाराम!" सहसा फाइल में से आवाज आयी, "कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है? क्या पेंशन का ऑर्डर आ गया?" नारद चौंके पर दूसरे ही क्षण बात समझ गये। बोले, "भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो?" "हाँ," आवाज आयी। नारद ने कहा, "मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग में तुम्हारा इन्तजार हो रहा है।" आवाज आयी, "मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। में अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता।"

अथवा

फ़ल की भावना से उत्पन्न आनंद भी साधक कर्मो की ओर हर्ष और तत्परता के साथ प्रवृत्त करता है। पर फल का लोभ जहाँ प्रधान रहता है, वहाँ कर्म-विषयक आनंद उसी फल की भावना की तीव्रता और मंदता पर अवलंबित रहता है। उद्योग के प्रवाह के बीच जब-जब फल की भावना मंद पड़ती है-उसकी आशा कुछ धुँधली पड़ जाती है, तब-तब आनंद की उमंग गिर जाती है और उसी के साथ उद्योग में भी शिथिलता आ जाती है। पर कर्म-भावना-प्रधान उत्साह बराबर एकरस रहता है। फलासक्त उत्साही असफल होने पर खिन्न और दुखी होता है; पर कर्मासक्त उत्साही केवल कर्मानुष्ठान के पूर्व की अवस्था में हो जाता है। अत: हम कह सकते हैं कि कर्म-भावना-प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह है। फल-भावना-प्रधान उत्साह तो लोभ ही का एक प्रच्छन्न रुप है।

गाड़ी चलन दी, तो उस वक्त रमा को अपनी दशा पर रोना आ गया। हाय, न जाने कभी लौटना नसीब भी हो या नहीं। फिर से सुख के दिन कहाँ मिलेंगे। यह दिन तो गये, हमेशा के लिए गये। इसी तरह सारी दुनिया से मुँह छिपाये, वह एक दिन मर जाएगा। कोई उसकी लाश पर आँसू बहाने वाला भी न होगा। घर वाले रो-धोकर चुप हो रहेंगे। केवल थोड़े-से संकोच के कारण उसकी यह दशा हुई। उसने शुरू से ही जालपा से अपनी सच्ची हालत कह दी होती, तो आज मुँह पर कालिख लगाकर क्यों भागना पड़ता; मगर कहता कैसे, वह अपने को अभागिनी न समझने लगती!

2. 'उपन्यास' की परिभाषा देते हुए उसके तत्वों का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

कहानी की विकास यात्रा पर विचार कीजिए। (18)

3. 'पुरस्कार' कहानी के आधार पर मधुलिका के चरित्र की विशेषताएं उजागर कीजिए।

अथवा

'ऐसी होली खेलो लाल' कहानी में चित्रित राष्ट्रीय चेतना का वर्णन कीजिए। (14)

4. 'शरणदाता' कहानी विभाजन की विभीषिका पर लिखी गई है-स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'वापसी' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (14)

5. 'गबन' के कथानक की समीक्षा लिखिए।

अथवा

'गबन' उपन्यास में वर्णित सामाजिक समस्या पर विचार कीजिए। (14)

(6500)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4753 **I**

Unique Paper Code : 2052202301

Name of the Paper : हिंदी कथा साहित्य

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (10+10+10=30)

(क) खिलाड़ी शिशु जैसे, श्रावण की संध्या में जुगनू को पकड़ने के लिए हाथ लपकाता है, वैसे ही मधुलिका मन ही मन कह रही थी। अभी वह निकल गया। "वर्षा ने ओषण रूप धारण किया। गड़गड़ाहट बढ़ने लगी, ओले पड़ने की संभावना थी। मधुलिका अपनी जर्जर झोपड़ी के लिए कांप उठी। सहसा बाहर कुछ शब्द हुआ-" कौन है यहाँ? पथिक को आश्रय चाहिए। "मधुलिका ने इंठलों का कपाट खोल दिया। बिजली चमक उठी। उसने देखा एक पुरुष घोड़े की डोर पकड़े खड़ा है। सहसा वह चिल्ला उठी 'राजकुमार!'

अथवा

हेमन्त बीत चला था और प्रकृति के पत्ते पत्ते पर वसन्त के आगमन की सूचना छपी-सी मालूम पड़ती थीं। समय सायंकाल का था। जागीरदार के सुन्दर महल के सामने के उपवन में सुन्दरता से सजे हुए फूलों से पेड़ों से घिरे हुए संगमरमर के चबूतरे पर बैठे दो युवक-युवती धीरे-धीरे बातें कर रहे थे-

"तुम्हारी मां क्या कहती थीं?" युवक ने युवती से पूछा।

"कहती थी," युवती ने उत्तर दिया, "इसी होली के बाद हम लोगों का ब्याह अवश्य हो जाएगा और तुम्हारी माताजी क्या कहती थीं?"

(ख) देविन्दरलाल का मन ग्लानि से उमड़ गया। इस धक्के को राजनीति की भुरभुरी रेत की दीवार के सहारे नहीं, दर्शन के सहारे ही झेला जा सकता था। देविन्दरलाल ने जाना कि दुनिया में खतरा बुरे की ताकत के कारण नहीं, अच्छे की दुर्बलता के कारण है। भलाई की साहसहीनता ही बड़ी बुराई है। घने बादल से रात नहीं होती, सूरज के निस्तेज हो जाने से होती है। उन्होंने खाना उठाकर बाहर आँगन में रख दिया। दो घूंट पानी पिया, फिर टहलने लगे। तनिक देर बाद उन्होंने आकर ट्रंक खोला। एक बार सरसरी दृष्टि से सब चीजों को देखा, फिर ऊपर के खाने में से दो-एक कागज दो-एक फोटो एक सेविंग बैंक की पासबुक और एक बड़ा सा लिफाफा निकाल कर एक काले शेरवानीनुमा कोट की जेब में रखकर कोट पहन लिया। आँगन में आकर एक क्षण भर कान लगाकर सुना।

अथवा

गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी। जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था। उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था, बड़े लड़के अमर और लड़की कांति की शादियाँ कर दी थीं, दो बच्चे ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे। गजाधर बाबू नौकरी के कारण प्रायः छोटे स्टेशनों पर रहे और उनके बच्चे और पत्नी शहर में, जिससे पढ़ाई में बाधा न हो। गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी भी।

(ग) उसने प्रातःकाल नाश्ता करके दफ्तर की राह ली। शायद वहाँ कुछ प्रबन्ध हो जाये। कौन प्रबन्ध करेगा, इसका उसे ध्यान न था। दफ्तर में चपरासी के सिवा और कोई न था। रमा रजिस्टर खोलकर अंकों की जाँच करने लगा। कई दिनों से मीजान नहीं किया थाय पर बड़े बाबू के हस्ताक्षर मौजूद थे। अब मीजान किया, तो ठाई हजार निकले। एकाएक उसे एक नई बात सूझी। क्यों न ठाई हजार की जगह मीजान में दो हजार लिख दूँ? रसीद वही की जाँच 'कौन करता है? अगर चोरी पकड़ी भी गई, तो कह दूँगा, मीजान में गलती हो गई। मगर इस विचार को उसने मन में टिकने न दिया। इस भय से कि कहीं चित्त चंचल न हो जाए, उसने पेंसिल के अंकों पर रोशनाई फेर दी।

अथवा

कई रात उन्माद हुआ कि अभी सारी कथा किसी पत्र में छपवा दूँ, सारी कलई खोल दूँ, पर सभी उद्वेग शांत हो गये। आत्मा की गहराइयों में छिपी हुई शक्ति उसकी जुबान बंद कर देती थी। रमा को उसने हृदय से निकाल दिया था। उसके प्रति अब उसे क्रोध न था, द्वेष न था, दया भी न थी, केवल उदासीनता थी। उसके मर जाने की सूचना पा कर भी शायद वह न रोती। प्रणय का वह बंधन जो उसके गले में दो-ढाई साल पहले पड़ा था टूट चुका था, पर उसका निशान बाकी था।

2. कहानी में संरचना तत्वों का महत्व समझाइए।

अथवा

उपन्यास की परिभाषा स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए कीजिए। (18)

3. मधुलिका की चारित्रिक विशेषताएँ बतलाइए। (14)

अथवा

एसी होली खेलों लाल कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

4. शरणदाता कहानी की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा

वापसी कहानी का उद्देश्य बतलाइए। (14)

5. ग़बन उपन्यास के आधार पर रमानाथ का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा

ग़बन उपन्यास का सार अपने शब्दों में लिखिए। (14)

(2400)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2311 **I**

Unique Paper Code : 2052202301

Name of the Paper : हिंदी कथा साहित्य

Name of the Course : **BA (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : III – DSE-5

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>**छात्रों के लिए निर्देश**</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10+10=30)

(क) पथ अन्धकारमय था और मधूलिका का हृदय भी निविड़-तम से घिरा था। उसका मन सहसा विचलित हो उठा, मधुरता नष्ट हो गई। जितनी सुख-कल्पना थी, वह जैसे अन्धकार में विलीन होने लगी। वह भयभीत थी, पहला भय उसे अरुण के लिए उत्पन्न हुआ, यदि वह सफल न हुआ तो? फिर सहसा सोचने

लगी–वह क्यों सफल हो? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाय? मगध का चिरशत्रु! ओह, उसकी विजय! कोशल–नरेश ने क्या कहा था–'सिंहमित्र की कन्या।

अथवा

रास्ते में एक गली के नुक्कड़ किसी की चिल्लाहट सुन कर क्षण भर के लिए रुककर उधर देखने लगा। ओह। वहाँ पर कुछ लड़कों के ऊपर बेंत पड़ रहे थे । मुझे अपनी बातें भूल गईं द्य मैं उन भोले, सुकुमार बालकों की दुर्दशा देखने लगा। अभागों को तीस–तीस बेंतों की आज्ञा मिली थी। वे दो–चार बेंत कहा कर ही बेहोश हो जाते थे। पर इससे उनकी जान नहीं बचती थी द्य पानी डाल कर होश में लाए जाते और फिर टिकटी से बांध कर बेंत के शिकार बनाए जाते। सब–के–सब लहू से तर हो गए थे। प्राय: सभी बेहोश थे, फिर भी उन्हें हथकड़ियाँ पहनाई गईं और वे घसीटकर किले की और ले जाए गए।

(ख) हिन्दू मुहल्ले में रेलवे के एक कर्मचारी ने बहुत–से निराश्रितों को अपने घर में जगह दी थी जिनके घर–बार सब लुट चुके थे। पुलिस को उसने खबर दी थी कि ये निराश्रित उसके घर टिके हैं, हो सके तो उनके घरों और माल की हिंफांजत की जाऐ। पुलिस ने आकर शरणागतों के साथ उसे और उसके घर की स्त्रियों को गिरफ्तार कर लिया और ले गयी! पीछे घर पर हमला हुआ, लूट हुई और घर में आग लगा दी गयी। तीन दिन बाद उसे और उसके परिवार को थाने से छोड़ा गया और हिफाजत

के लिए हथियारबन्द पुलिस के दो सिपाही साथ किये गये। थाने से पचास कदम के फासले पर पुलिसवालों ने अचानक बन्दूक उठाकर उस पर और उसके परिवार पर गोली चलायी। वह और तीन स्त्रियाँ मारी गयीं। उसकी माँ और स्त्री घायल होकर गिर गयीं और सड़क पर पड़ी रहीं...

अथवा

जब कभी उनकी पत्नी को कोई लंबी शिकायत करनी होती, तो अपनी चटाई बैठक में डाल पड़ जाती थीं। वह एक दिन चटाई लेकर आ गईं। गजाधर बाबू ने घर–गृहस्थी की बातें छेड़ी, वह घर का रवैया देख रहे थे। बहुत हल्के–से उन्होंने कहा कि अब हाथ में पैसा कम रहेगा, कुछ खर्च्च कम होना चाहिए।

"सभी खर्च तो वाज़िब–वाज़िब हैं, किसका पेट काटूँ? यही जोड़–गाँठ करते–करते बूढ़ी हो गई, न मन का पहना, न ओढ़ा।"

(ग) जिस देश में रहते है, जिसका अन्न जल खाते है, उसके लिए इतना भी न करें, तो जीने को धिक्कार है। दो जवान बेटे इसी सुदेशी की भेंट कर चुका हूँ।, भैया। ऐसे–ऐसे पट्ठे थे कि तुमसे क्या कहूँ। दोनों विदेशी कपड़े की दुकान पर तैनात थे। क्या मजाल थी कि कोई आहक दुकान पर आ जाये। हाथ जोड़ कर घिघियाकर, धमकाकर, लजवाकर, सबको फेर देते थे। बजारे में सियार लोटने लगे।

अथवा

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 6634 **I**

Unique Paper Code : 12051301

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Adhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A.(Hons)Hindi-CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. इस प्रश्न पत्र के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. स्वाधीनता आंदोलन और नवजागरण कालीन चेतना के उत्कर्ष की विवेचना कीजिए । (15)

अथवा

खड़ी बोली आंदोलन में महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके युगीन साहित्यकारों का योगदान स्पष्ट कीजिए ।

P.T.O.

2. कहानी की विकास यात्रा की विवेचना कीजिए । (15)

अथवा

निबंध की परिभाषा देते हुए उसकी विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए ।

3. छायावाद की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालें। (15)

अथवा

प्रयोगवाद के नामकरण का आधार बताते हुए उसके परिवेश का उल्लेख कीजिए ।

4. दलित विमर्श पर आधारित साहित्य की विवेचना कीजिए । (15)

अथवा

साठोत्तरी कविता की सामान्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए ।

5. **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए।

(क) संस्मरण और रेखाचित्र का संबंध

(ख) नवगीत

(ग) समकालीन कविता

(घ) शुक्ल युगीन आलोचना (8, 7)

(1500)

(3) एडिटर गिल्ड ऑफ़ इंडिया

(4) मानहानि कानून

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............
आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 6635 **I**

Unique Paper Code : 11011303

Name of the Paper : माध्यम कानून और आचार संहिता

Name of the Course : **बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. आजादी से पहले भारत के प्रमुख प्रेस कानूनों का परिचय दीजिए। (15)

अथवा

प्रेस आयोग के महत्व को प्रतिपादित करते हुए बछावत एवं पालेकर वेगबोर्ड की सिफारिश का वर्णन कीजिए।

2. बौद्धिक संपदा कानून का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए पेटन्ट कानून A70 पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

सूचना का अधिकार अधिनियम का उद्देश्य क्या है ? सूचना अधिकार अधिनियम 2005 की प्रमुख धाराओं का परिचय दीजिए ।

3. पत्रकारों के लिए आचार संहिता की आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

विज्ञापन संबंधी आचार संहिता का परिचय देते हुए किसी केस स्टडी के आधार पर इसका आकलन कीजिये।

4. प्रसार भारती क्या है ? प्रसार भारती के कार्यो का सविस्तार उल्लेख कीजिए । (15)

अथवा

केबल टेलीविजन नियमन अधिनियम 1995 संबंधी प्रावधानों पर विचार कीजिए ।

.5. **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए (8+7)

(1) न्यायालय अवमानना अधिनियम

(2) संसदीय विशेषाधिकार अधिनियम

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3876 **I**

Unique Paper Code : 2126000002

Name of the Paper : SIRJNATMAK LEKHAN

Name of the Course : **Common Program Group : SEC**

Semester : III

Duration : 1 Hour Maximum Marks : 30

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

ਨੋਟ: ਸਾਰੇ ਭਾਗ ਕਰਨੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹਨ।

ਭਾਗ ਪਹਿਲਾ

1. ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਸਰੂਪ ਨੂੰ ਦੱਸਦਿਆਂ, ਇਸ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਵਾਂ ਬਾਰੇ ਲਿਖੋ। (10)

   Explaining the forms of literature, write about its salient features.

   साहित्य के स्वरूप को समझाते हुए उसकी प्रमुख विशेषताओं के बारे में लिखिए।

   ਜਾਂ

   ਸਾਹਿਤ ਸਿਰਜਣਾ ਦੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਨੁਕਤਿਆਂ 'ਤੇ ਚਰਚਾ ਕਰੋ।

   साहित्य सृजन के मूल बिन्दुओं पर चर्चा करें।

   Discuss the basic points of literary creation.

ਭਾਗ ਦੂਜਾ

ਨੋਟ : ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਕਿਸੇ ਦੋ ਦੇ ਉੱਤਰ ਲਿਖੋ : (5X2=10)

2. ਖੁੱਲ੍ਹੀ ਕਵਿਤਾ ਕਿਸ ਨੂੰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ? ਖੁੱਲ੍ਹੀ ਕਵਿਤਾ ਦੀਆਂ ਕੋਈ ਦੋ ਉਦਾਹਰਨਾਂ ਦਿਉ।

   What is called a free verse? Give any two examples of free verse.

   खुली कविता किसे कहते हैं? खुली कविता के कोई दो उदाहरण दीजिए।

3. ਗ਼ਜ਼ਲ ਦੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਤੱਤਾਂ ਬਾਰੇ ਵਿਸਥਾਰ ਪੂਰਵਕ ਚਰਚਾ ਕਰੋ।

   ग़ज़ल के आवश्यक तत्वों की विस्तार से चर्चा करें।

   Discuss the essential elements of Ghazal in detail.

P.T.O.

4. ਕਥਾਨਕ ਤੇ ਪਾਤਰ-ਚਿੱਤਰਣ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਕਿੰਨੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ? ਵਿਸਥਾਰ ਪੂਰਵਕ ਲਿਖੋ।
How important is the plot and character-sketch in a story? Write in detail.
कहानी में कथानक और चरित्र-चित्रण कितना महत्वपूर्ण है? विस्तार से लिखिए.

5. ਨਿਬੰਧ ਅਤੇ ਕਹਾਣੀ ਵਿਚਲੇ ਅੰਤਰ ਨੂੰ ਸਪੱਸ਼ਟ ਕਰੋ ।
निबंध और कहानी के बीच अंतर स्पष्ट करें।
Explain the difference between essay and story.

6. ਵਿਸ਼ੇ ਦੀ ਚੋਣ ਸਮੱਗਰੀ ਸੰਬੰਧੀ ਟਿੱਪਣੀ ਕਰੋ ।
Comment on the selection of subject matter.
विषय चयन सामग्री पर टिप्पणी करें।

ਭਾਗ ਤੀਜਾ

7. ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਕਿਸੇ ਦੋ ਦੇ ਉੱਤਰ ਲਿਖੋ : (5X2=10)

I. ਕਾਵਿ-ਬਿੰਬ ਨੂੰ ਪਰਿਭਾਸ਼ਿਤ ਕਰੋ ।
काव्यात्मक बिम्ब को परिभाषित करें।
Define poetic image.

II. ਗੀਤ ਤੇ ਗ਼ਜ਼ਲ ਵਿੱਚ ਅੰਤਰ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕਰੋ ।
Explain the difference between song and ghazal.
गीत और ग़ज़ल में अंतर स्पष्ट करें।

III. ਨਿੱਕੀ ਕਹਾਣੀ ਦੀਆਂ ਕੋਈ ਪੰਜ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਵਾਂ ਬਾਰੇ ਲਿਖੋ ।
लघुकथा की कोई पाँच विशेषताएँ लिखिए।
Write any five characteristics of a short story.

IV. ਭਾਸ਼ਾ ਸ਼ੈਲੀ ਸੰਬੰਧੀ ਚਰਚਾ ਕਰੋ ।
Discuss about language style.
भाषा शैली के बारे में चर्चा करें।

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No. :.......................

Sl. No. of Q. Paper : **2007** **I**

Unique Paper Code : 2053100007

Name of the Paper : भारतीय और पाश्चात्य रंगमंच

Name of the Course : **B. A. (Hons.) Hindi - DSE**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना अनुक्रमांक नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नाटक की उत्पत्ति संबंधी भारतीय अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 18

अथवा

पाश्चात्य दृष्टि से नाटक के स्वरूप संबंधी मान्यताओं का विवेचन कीजिए।

2. उपरूपक की परिभाषा देते हुए इसके भेदों का परिचय दीजिए। 18

अथवा

रेडियो नाटक की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए उसके तत्वों का विवेचन कीजिए।

3. अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत को स्पष्ट कीजिए। 18

अथवा

विरेचन शब्द को परिभाषित करते हुए इसके स्वरूप की विवेचना कीजिए।

4. त्रासदी की परिभाषा देते हुए इसके विभिन्न तत्वों के बारे में बताइए। 18

अथवा

मेलोड्रामा का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताएँ लिखिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 9+9=18

(क) नाटक की उत्पत्ति संबंधी पाश्चात्य अवधारणा

(ख) काव्य नाटक

(ग) सामाजिक नाटक

(घ) कामदी

***

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 7+7=14

(क) मास कल्चर

(ख) नाटक

(ग) कवि प्रदीप

(घ) ऐयारी उपन्यास

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **3166** **I**

Unique Paper Code : 2054000008

Name of the Paper : लोकप्रिय हिन्दी साहित्य

Name of the Course : **G. E. Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : 8+8=16

(क) मृदु भावों के अंगूरों की आज बना लाया हाला,
प्रियतम, अपने ही हाथों से आज पिलाऊँगा प्याला
पहले भोग लगा लूँ तेरा फिर प्रसाद जग पाएगा,
सबसे पहले तेरा स्वागत करती मेरी मधुशाला

अथवा

नींद भी खुली न थी कि हाय धूप ढल गई
पाँव जब तक उठे कि जिंदगी फिसल गई
पात - पात झर गए कि शाख़ - शाख़ जल गई
चाह तो निकल सकी न, पर उमर निकल गई।

(ख) हमारे राजा के यहाँ बनिस्बत काफिरों के मुसलमान ज्यादा हैं, उन सभी को आपकी मदद के लिए मैं राजी कर सकता हूँ और उन लोगों से कसम खिला सकता हूँ कि महाराज के बाद आपको राजा मानें, मगर शर्त यह है कि काम हो जाने पर आप भी हमारे मजहब मुसलमानी को कबूल करें।

अथवा

जासूसी जान पहचान भी निराले ही ढंग की होती है। हैदर चिराग अली नाम के एक धनी मुसलमान सौदागर का बेटा था। उससे जासूस की गहरी मिताई थी। उमर में जासूस से हैदर से पाँच बरस कम ही होगा, लेकिन शरीर से दोनों एक ही उम्र के दीखते थे। मुसलमान होने पर भी हैदर जैसे और मुसलमान हिंदुओं से छिटके फिरते हैं, वैसे नहीं राहत था। काम पड़ने पर हैदर जासूस के साथ अठवाडों दिन रात रह जाता और जासूस भी कभी - कभी हैदर के घर जाकर उसके बाप चिराग से मिलता।

2. लोकप्रिय संस्कृति की परिभाषा देते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं का परिचय दीजिए। 15

अथवा

कला के विविध आयामों को स्पष्ट कीजिए।

3. साहित्य की मुख्यधारा के समानांतर लोकप्रिय साहित्य की भूमिका को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

लोकप्रिय साहित्य के अंतर्गत 'उपन्यास' के विधागत वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिए।

4. 'मधुशाला' का प्रतिपाद्य लिखिए : 15

अथवा

'दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल' गीत का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

5. उपन्यास चंद्रकांता के आधार पर वीरेंद्र सिंह की चारित्रिक विशेषताओं का मूल्यांकन कीजिए। 15

अथवा

'गुप्तकथा' का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(2) रामलीला (6)

अथवा

जंतसारी

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............
आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 6764 **I**

Unique Paper Code : 12057501

Name of the Paper : Hindi Ki Maukhik aur Lok-Sahitya Parampara

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए (12×4=48)

(क) लोकसाहित्य का अर्थ एवं परिभाषा स्पष्ट करते हुए लोकसाहित्य के विविध रूपों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिन्दी प्रदेश की जनपदीय बोलियों और उनके साहित्य पर एक आलेख लिखिए।

(ख) लोकगीत का अर्थ एवं परिभाषा देते हुए लोकगीत की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

ऋतु संबंधी गीत किसे कहते हैं? ऋतु संबंधी गीतों पर विस्तृत लेख लिखिए ।

(ग) लोकगाथा का स्वरूप स्पष्ट करते हुए लोकगाथाओं में वर्णित 'आल्हा' का कथ्य एवं विश्लेषण लिखिए।

दिन-रात लागल बिदेसी कलकत्ता में उतरलहूँ ।।

खोजत-खोजत बिदेसी कतहूँ पता तनिको ना पलहूँ।

प्यारी का कारनवाँ पाँच गो रोपेआ अबले ना कमल हूँ।

झूठहूँ का फेर में मत परिह, असले कहल कहल हूँ।

कहत 'भिखारी' आजु हम भेजब कसहूँ बबुआ बलहूँ।

3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए

(1) ख्याल (7)

अथवा

बुझौवल

हूर सजकै बिजली सी होरी, सारी बिन समझें कमजोरी ।

गोररी लाल पातर का हाल, जणैं चाल मारवने हाथी मैं।।

करै सै या किस माणस की दया, रहम का खोज कती न रहया।

गया बिछड़ साथ नहीं हाथ बात, गोरा गात ल्हको लिया गाती मैं।।

अथवा

बात एक सुनिल बिदेसी भइया, घरवा से चलि अलहूँ।

तोहार जनाना के दुखबा देखि के सुनि के पति अलहू ।

दीसन पर आइ बिदेसी भइया रेल पर चढ़ि गलहूँ।

अथवा

लोककथा का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए मालवी लोककथा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

(घ) लोकनाट्य का परिचय देते हुए उत्तरप्रदेश की लोकनाट्य शैली 'नौटंकी' की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

अथवा

'बिदेसिया' लोकनाट्य में किन-किन समस्याओं को उजागर किया गया है? विस्तार से उल्लेख कीजिए ।

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए (7+7)

कैले तोहे बाला बटू घर ही बोला छ ।

बबज्यू मेरा ककज्यं मेरा निरमोही लै काशी लगाछ ।

इहो काशी लगा छ।

ईजू मेरी काखी मेरी दयावति घर ही बोला छ,

इहो घर ही बोला छ ।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अर्थवेद घर ही पंदूला बटू, घर ही पंदूला ।

चार ही वेद–बटू घर ही पढूंला बटू घर ही पढूंला ।

अथवा

कइसे खेले जाइब सावन में कजरिया

बदरिया घिरि आइल ननदी ।।

घर से निकसी अकेली, संग में एको ना सहेली

गुण्डा रोकि लेले बिचहीं डगरिया

बदरिया आइल ननदी ।।

कतना जाना फाँसी जइहें

कतना गोली खाके मुँइहें

कतना पीसत होइ हैं जेहल में चकरिया

बदरिया घिरि आइल ननदी ।

(ख) मरे बिना खोट, हुए लोटपोट, मेरै चोट लागग्यी छाती मैं।

मनैं रंज गम का प्याला पीया, आज मैं के जीवण मैं जीया ।

दिया मार शेर, किसा हेर फेर, गई गेर पतंगा पाती मैं ।।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी नाटक के नायकत्व पर प्रकाश डालिए।

4. 'बकरी' नाटक में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

नाटक के तत्वों के आधार पर 'बकरी' नाटक की समीक्षा कीजिए।

5. 'स्ट्राइक' एकांकी की मूल संवेदना लिखिए। 12

अथवा

'तीन अपाहिज' एकांकी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6655** **I**

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिंदी नाटक/एकांकी

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 9×3=27

(क) जेहि छिन बलभारे हे सबै तेग धारे ।
तब सब जग धाई फेरते हे दुहाई ।।
जग सिर पग धारे धावते रोस भारे ।
विपुल अवनि जीती पालते राजनीति ।।
जग इन बल काँपै देखिकै चण्ड दापै ।।
सोई यह प्रिय मेरे ह्वे रहे आज चेरे ।।

अथवा

हाँ, सुनिए। फूट, डाह, लोभ, भय, उपेक्षा, स्वार्थपरता, पक्षपात, हठ, शोक, अश्रुमार्जन और निर्बलता इन एक दूरजन दूती और दूतों को शत्रुओं की फौज में हिला - मिलाकर ऐसे पंचामृत बनाया कि सारे शत्रु बिना मारे घण्टा पर के गरुड़ हो गए। फिर अन्त में भिन्नता गई। इसने ऐसा सबको काई की तरह फाड़ा कि भाषा, धर्म, चाल, व्यवहार, खाना, पीना सब एक - एक योजन पर अलग - अलग कर दिया। अब आवें बचा ऐक्य! देखें आ ही के क्या करते हैं।

(ख) भयानक समस्या है। मूर्खों ने स्वार्थ के लिए साम्राज्य के गौरव का सर्वनाश करने का निश्चय कर लिया है ! सच है, वीरता जब भागती है, तब उसके पैरों से राजनीतिक छलछन्द की धूल उड़ती है।

अथवा

मैं अपनी आँखों से अपना वैभव और अधिकार दूसरों को अन्याय से छीनते देख रहा हूँ और मेरी वाग्दत्ता पत्नी मेरे ही अनुत्साह से आज मेरी नहीं रही। नहीं, यह शील का कपट, मोह और प्रवञ्चना है। मैं जो हूँ, वही तो नहीं स्पष्ट रूप से प्रकट कर सका। यह कैसी विडंबना है! विनय के आवरण से मेरी कायरता अपने को कब तक छिपा सकेगी ?

(ग) पच्चीस साल से इस बकरी की खोज हो रही थी। सरकार का खुफिया विभाग, पुलिस, पलटन सब इसे खोज रहे थे। आखिरकार यह बकरी आपके गाँव में मिली है। यह गाँधी जी की बकरी है। गाँधी महात्मा की बकरी है। जिन्होंने आपको इस लाइक बनाया कि आप आज इस तरह शान से खड़े हैं। आपको आज़ादी दिलाई सब लोग प्रेम से बोलिए गाँधी महात्मा की जय !

अथवा

बेटा यह कुटुंब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ हैं। डालियों ही से पेड़ पेड़ है और डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी, सब उसकी छाया को बढ़ाती है। मैं नहीं चाहता, कोई डाली इससे टूटकर पृथक् हो जाए। तुम सदैव मेरा कहना मानते रहे हो। बस यही बात मैं कहना चाहता हूँ ।

2. क्या 'भारत दुर्दशा' नाटक दुखांत है ? युक्तियुक्त विवेचना कीजिए। 12

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक के मूल कथ्य पर प्रकाश डालिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 1693 **I**

Unique Paper Code : 2052153501

Name of the Paper : जनमाध्यम के सिद्धांत (DSC)

Name of the Course : बी.ए. ऑनर्स हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. जनमाध्यम का स्वरूप स्पष्ट करते हुए इसके विभिन्न प्रकारों का परिचय दीजिए।

अथवा

जनमत निर्माण में जनमाध्यमों की भूमिका का आकलन कीजिए। (20)

P.T.O.

2. संचार प्रारूप (मॉडल) के विभिन्न प्रकारों का परिचय दीजिए ।

अथवा

लासवेल और विल्बर श्रैम के संचार प्रारूपों का वर्णन कीजिए ।

(20)

3. जनसंचार के नियामक सिद्धांतों में सामाजिक उत्तरदायित्व और साम्यवादी सिद्धांतों का परिचय देते हुए इनकी तुलना प्रस्तुत कीजिए ।

अथवा

जनसंचार के बुलेट और गेटकीपिंग सिद्धांत की विवेचना कीजिए।

(20)

4. माध्यम प्रभाव के अंतर्गत फीड बैक और फीड फॉरवर्ड का विस्तृत विश्लेषण कीजिए ।

अथवा

''उपभोक्ता संस्कृति ने मीडया पर गहरा प्रभाव डाला है।'' कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए । (20)

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (5,5)

(क) जनमाध्यम के उद्देश्य

(ख) लोकतंत्र सहभागिता का सिद्धांत

(ग) कल्टीवेशनल सिद्धांत

(घ) जनसंचार का मनोवैज्ञानिक सिद्धांत

(500)

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **1692** **I**

Unique Paper Code : 2052103501

Name of the Paper : पाश्चात्य काव्यशास्त्र

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

निर्देश :

(क) इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के अनुसार त्रासदी को पारिभाषित करते हुए उसके तत्वों का निरुपण कीजिए। 18

अथवा

लोंजाइनस के उदात्त सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए।

2. कॉलरिज के कल्पना सिद्धान्त का विश्लेषण कीजिए।

18

P.T.O.

अथवा

'कविता व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व से पलायन है।' इस कथन के संदर्भ में टी.एस. इलियट के निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए।

3. स्वच्छंदतावाद की अवधारणा पर विचार कीजिए। 18

अथवा

संरचनावाद का विश्लेषण कीजिए।

4. बिम्ब की परिभाषा देते हुए काव्य में उसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए। 18

अथवा

विसंगति और विडम्बना की अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 9+9=18

(क) अनुकरण सिद्धान्त

(ख) वड्र्सवर्थ की काव्य भाषा विषयक मान्यता

(ग) यथार्थवाद

(घ) फैंटेसी

***

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2461 **I**

Unique Paper Code : 2053200001

Name of the Paper : VIBHAJAN-VIBHISHIKA AUR HINDI SAHITYA (विभाजन-विभीषिका और हिन्दी साहित्य)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) HINDI – DSE**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. भारत विभाजन के सामाजिक और राजनीतिक दुष्परिणाम स्पष्ट कीजिए। (18)

अथवा

स्वाधीनता आन्दोलन के संदर्भ में विस्तार से लिखिए।

P.T.O.

2. 'शरणार्थी कविता शृंखला' का प्रतिपाद्य लिखिए। (18)

अथवा

'देश विभाजन' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

3. 'मलबे का मालिक' कहानी में रक्खे पहलवान का चरित्र चित्रण कीजिये। (18)

अथवा

'मैं जिंदा रहूँगा' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

4. 'जुलूस' उपन्यास की मूल संवेदना लिखिए। (18)

अथवा

'जुलूस' उपन्यास में निहित राजनीतिक विकृतियों को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** टिप्पणी लिखिए : (9+9=18)

(क) भारत-विभाजन की पृष्ठभूमि ।

(ख) 'देश विभाजन' कविता की मूल संवेदना ।

(ग) 'सिक्का बदल गया' का सारांश ।

(घ) 'जुलूस' का केन्द्रीय चरित्र

(1000)